रूसी लोक-कथा

गुलगुला

रूस की लोक-कथा (हिंदी कहानी)

एक समय की बात है कि एक बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ रहता था ।

अब एक रोज़ बुड्ढ़े ने अपनी बीबी से कहा : "उठ री, बुढ़िया, चल, जरा आटे के कुठार को खुरच कर आनाज के कुठार को झाड़-बुहार कर थोड़ा सा आटा निकाल और एक गुलगुला बना दे ।"

बुढ़िया ने बत्तख़ का एक पंख लेकर आटे के कुठार को खुरचा और अनाज के कुठार को झाड़ा-बुहारा और किसी तरह दो मुट्ठी आटा निकाला ।

मलाई उसमें डाल कर
गूंथ-गूंथ कर बना,
गोल-गोल गुलगुला,
घी में सेंक-भून कर
खस्ता और भुरभूरा ।

ठंड़ा करने के लिए
खिड़की में धरा गया;
मैं नहीं हूँ बेबकूफ

वहाँ से मैं लुढ़क चला ।
बाबा को नहीं मिला,
दादी को नहीं मिला,
ओ मियां ख़रगोश राम,
तुम को भी नहीं मिला !"

और ख़रगोश पलक भी न मार पाया कि गुलगुला लुढ़कता हुआ आगे निकल गया ।

वह लुढ़कता गया, लुढ़कता गया । रास्ते में मिला एक भेड़िया ।

"गुलगुले आ गुलगुले मैं तुझे खा जाऊंगा, भेड़िये ने कहा ।

"नहीं, नहीं, भूरे भेड़िये, मुझे न खाओ। मैं तुम्हें एक गाना सुनाये देता हूँ :

मैं हूँ गोल गुलगुला,
खस्ता और भुरभुरा
आटे के कुठार को
खुरच, खुरच, खुरच कर
अनाज के कुठार को,
झाड़ कर, बुहार कर,
जितना आटा मिल सका,
मलाई में उसे डाल कर,
गूंथ-गूथ कर बना,
गोल-गोल गुलगुला ।

घी में सेंक-भून कर